P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-1) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में जाट महिलाओं का योगदान

नवीन दहिया सहरावत
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
महाराजा विनायक ग्लोबल युनिवर्सिटी, जयपुर
राजस्थान

सारांश

भारत वीर सपूतों की धरती है और यहां आजादी की लड़ाई में कई वीरांगनाओं ने भी अपना बलिदान दिया था। इसकी मिट्टी से होनहार बहादुर सुत भी पैदा हुए है और सुता भी। भारत तकरीबन एक सदी तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। इस गुलामी की बेडियों को काटने के लिए हिन्दुस्तान की वीरांगनाओं ने अपनी जान की बाजी लगा दी।

1857 के पहले स्वातत्र्य समय से लेकर 1947 तक ये महिलाएं डटी रही और जब आजाद भारत की अपनी लोकतांत्रिक सरकार बनी उस वक्त भी नए भारत की नींव निर्माण में उन्होने शत प्रतिशत योगदान दिया। महिलाओं के सशक्तिकरण की बात होती है तो महान वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की चर्चा जरूर होती है। लक्ष्मीबाई की तरह ही कई ऐसी वीरागनाएं इस धरती पर हुई है, जिन्होने भारत को आजाद कराने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जैसे कि शिवदेवी , जयदेवी, श्रीमती उतमा देवी, श्रीमती त्रिवेणी देवी, सत्यवती देवी, किशोरी देवी, फूलां देवी, भंवरी कौर, अंजना देवी चौधरी, आदि वर्तमान लेख विशेष रूप से स्वतंत्रता अन्दोलन में जाट महिलाओं के योगदान को उजागर करना है।

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता आन्दोलन, 1857–1947 जाट महिलाएं।

प्रस्तावना

1857 की क्रांति के बाद हिन्दुस्तान की धरती पर हो रहे परिवर्तनों ने जहां एक ओर नवजागरण की जमीन तैयार की, वहीं विभिन्न सुधार आन्दोलनों और आधुनिक मूल्यों और रोशनी में रूढ़िवादी मूल्य टूट रहे थे, हिन्दू समाज के बंधन ढीले पड़ रहे थे और स्त्रियों की दुनिया चूल्हे–चौके से बाहर नए आकाश में विस्तार पा रही थी। इतिहार साक्षी है कि एक कट्टर रूढ़िवादी हिन्दू समाज में इसके पहले इतने बड़े पैमाने पर महिलाएं सड़कों पर नहीं उतरी थी। पूरी दुनिया के इतिहास में ऐसे उदाहरण कम ही मिलते है। गांधी जी ने कहा था कि हमारी मां–बहनों के सहयोग के बगैर यह संघर्ष सम्भव ही नहीं था। आजादी की लड़ाई में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के विरूद्ध कदम उठाए, वीरता और साहस तथा नेतृत्व की क्षमता का अभूत पूर्व परिचय दिया। इन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की बेटियों ने अपना कर्तव्य निभाया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारतीय महिलाओं (जाट महिलाओं) ने सामाजिक बदलावों के लिए विद्रोही गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। जाट महिलाएं जिन्होनें स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भूमिका निभाई जिनका जिक्र यहां लाजमी है। भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में महिलाओं ने वीरता के साथ क्रांतिकारी और अहिंसक आन्दोलनों में भाग लिया। भारत की इन महिलाओं का एक ही लक्ष्य था आजाद भारत, भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी सभी महिलाओं का नाम भर लेना असंभव है यहा तो एक झलक भर है। उस जमाने में बहुत सी बाधाओं के बावजूद स्वतंत्रता आन्दोलन में जाट महिलाओं का योगदान पुरूषों से कम नहीं था। इस शोध के माध्यम से जानते है ऐसी ही कुछ महान वीरंगनाओं के योगदान के बार में।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अंग्रेजों के अत्याचारों और निरंकुश प्रवृत्ति जिसने आमजन मानस को किस प्रकार प्रभावित किया। इनका अध्ययन ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य होगा।
2. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने अंग्रेजों को किस प्रकार प्रभावित किया और इसका क्या परिणाम हुआ इस शोध का उद्देश्य होगा।
3. स्वतंत्रता आन्दोलन में सामाजिक स्तर पर जनजागरूकता फैलाने में महिलाओं के योगदान को उजागर करना।

4. स्वतंत्रता आन्दोलन में स्थानीय ऐतिहासिक परिकल्पना को उजागर करना इस शोंध का उद्देश्य होगा।

शोध की परिकल्पना

इस शोध की संपूर्ण दिशा देने के लिए विभिन्न परिकल्पनाओं की संरचना करना अत्यन्त आवश्यक है जो इस प्रस्तुत शोध को पूरा करने में उपयोगी सिद्ध होगी। पर्दे में रहकर भी किस प्रकार महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया इसका अध्ययन प्रस्तुत शोध का मुख्य हिस्सा रहेगा। जाट महिलाओं ने रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़कर बढ़–चढ़कर स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इसका विस्तृत अध्ययन इस शोध में किया जाएगा।

शोध की पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु शोधकर्ता की पद्धति ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, समालोचनात्मक रही है। ज्ञात तथ्यों तथा इस विषय पर उपलब्ध पूर्ववर्ती लेखकों के विचारों का विश्लेषण, स्पष्टीकरण, मूल्यांकन परीक्षण करते हुए प्राप्त परिणामो का सत्य की कसौटी पर परीक्षण करने का प्रसास किया गया है। शोध अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु प्रस्तुत अध्ययव की विषय एवं शोध सामग्री की होती है। इस विषय पर प्राथमिक पर सामग्री भारत के राष्ट्रीय अभिलेखागार एवं इतिहासकारों की विभिन्न रचनाओं में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। इस विषय पर माध्यमिक सामग्री का अभाव हाने के कारण प्रस्तुत शोधपत्र में प्राथमिक स्तर की शोध सामग्री का अधिक उपयोग किया गया है।

इसके अलावा प्रस्तुत शोध सामग्री की विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त कर तथा शोध कर ही प्रयोग में लाया गया है।

सहित्यावलोकन

सन् 1857–1947 के स्वतंत्रता संग्राम में जाटों का योगदान के सन्दर्भ में किए गए शोध की उद्देश्यों तथा शोध पद्धति का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गए साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण, एवं मूल्यांकन किया गया है यथा–

डॉ॰ महेन्द्र नारायण शर्मा और डॉ॰ राकेश शर्मा

सन् सत्तावन के क्रांतिवीर बाबा शाहमल जाट'' प्रस्तुत पुस्तक में 1857 के क्रांतिवीर बाबा शाहमल जाट की यात्रा की एक प्रस्तुति है। बाबा शाहमल ने 1857 की जनक्रांति में तत्कालीन जनपद के तहसील बड़ौत और आसपास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हजारों किसानों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व किया और अंग्रेजों के विरूद्ध अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपने प्राणों को बलिदान कर दिया।

डॉ॰ पेमाराम और डॉ॰ विक्रमादित्य

'जाटों की गौरवगाथा' पुस्तक में जाट कौन थे उन महान चरित्र नायकों का वर्णन किया है जिन्होंने अन्धकार और अज्ञानता में सोई हुई जाट कौम को जगाने के लिए अपने जीवन के अमूल्य समय को इस दिशा मे लगा जाटों के जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास किया।

ठाकुर देशराज

''जाटा इतिहास' प्रस्तुत पुस्तक में अत्यंत खोजपूर्ण विशाल जाट समाज की उत्पति और विकास पर आज भी प्रमाणिक ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठापित है। इस ग्रन्थ नें यह सिद्ध कर दिया कि केवल जन्म के आधार पर अपने आप को कुलीन घोषित करने वाला सामती वर्ग ही समाज का भाग्य विधाता नहीं है, अपने पुरूषार्थ और परिश्रम की रोटी कमाने वाले मेहनतकश समाज को निम्न कोटि का समझना उसके साथ नाइंस्य की है। ''ठाकुर देशराज'' के जाट इतिहास' में तत्कालीन मिथलों को खंडित करने वाले कई तथ्य समाहित थे।

कप्तान दलीपसिंह अहलावत

'जाटवीरों का इतिहास'' पुस्तक की रच करके लेखक ने भारतीय इतिहास के मर्म को छुआ है। जाट शूरवीरों के कोशल की गौरवगाथा को इतिहास के परिपेक्ष्य में वर्णित किया है। युद्ध के समय में तलवार के धी और शांति के समय में हलपति का लेखक बहुत ही सुन्दर ढंग से चरित्र–चित्रण किया है।

भलेराम बेलीवाल

जाट योद्धाओं का इतिहास'' में वेदों, महाभारत, उपनिषद, पुराणों, देश–विदेशी लेखकों द्वारा हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी की पुस्तकों से जाटा लेखकों के बारे में वर्तमा सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर करगिल तक के तथ्य एवं प्रमाण जुटाए है।

स्वामी ओमान्द सरस्वती

''देशभक्तों के बलिदान'' में लेखक ने जाटवंश के वीरों की कुछ घटनाओं से लेकर लिखा है। लेखक ने जाट, ब्राह्मण, राजपूत और वैश्य आदि सभी का सामान्यतः उल्लेख किया है।

स्वतंत्रता आन्दोलन में जाट महिलाओं का योगदान

1857 की क्रांति के समय जाट युवतियों ने अंग्रेजों से जमकर लोहा लिया था अंग्रेजों ने अनेक जाट स्त्री, बच्चे, बूढ़ो की नृशंस हत्या की। 14 वर्षीय वीर बालिका जयदेवी अंग्रेजों के काफिले का पीछा करती और गांव–गांव घूमकर युवक–युवतियों में जोश पैदा करती। जयदेवी ने मेरठ, बुलदंशहर, अलीगढ, एटा, मैनपुरी, इटावा आदि जिलों में क्रांति की अलख जगाई। लखनऊ में जयदेवी ने अपने क्रांतिकारी दस्ते द्वारा बड़ौत में अत्याचार करने वाले अंग्रेज अधिकारी को मार डाला।

अपनी बहन के नक्शे कदम पर चलते हुए शिवदेवी ने भी अंग्रेजों को मारने का निश्चय किया। उसकी सहेली किशनदेवी ने भी इस आजादी–यश में भी साथ देने का निश्चय किया। बड़ौत के कुछ जाट युवकों के साथ शिवदेवी ने बड़ौत में ही अंग्रेजों के तंबुओं पर हमला किया। शिवदेवी के नेतृत्व में जाटों ने 17 अंग्रेजों को मार गिराया। जबकि 25 भागकर छिपने में सफल रहे। घायल शिवदेवी को अंग्रेजों ने घेर लिया वीर बालिका ने मरते दम तक अंग्रेजों से लोहा लेकर जाटों की उच्चतम शौर्य प्रदर्शन करने की परम्परा निभाई तथा समाज व देश को गौरवान्वित किया। जाट महिलाओं ने न केवल अंग्रेजों को हराया बल्कि किसान आन्दोलनों व समाज सुधार आन्दोलनों में भी बढ़चढ़कर भाग लिया। सीकर किसान आन्दोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सीहोट

के ठाकुर मानसिंह द्वारा सोतिया का बास नामूका गांव में किसान महिलाओं के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध में 25 अप्रैल 1934 को कटराथल नामक स्थान पर श्रीमती किशोरीदेवी की अध्यक्षता में एक विशाल महिला सम्मेलन में लगभग 10,000 महिलाओं ने भाग लिया। जिनमें श्रीमती दुर्गादेवी, श्रीमती फूलांदेवी, श्रीमती रमादेवी, श्रीमती उतमा देवी आदि प्रमुख थी। इस सभा की स्वागताध्यक्ष श्रीमती किशोरीदेवी धर्मपत्नी हरलाल सिंह थी। यह महिला सभा इस इलाके में प्रथम व अनूठी घटना थी। इस सभा में प्रस्ताव पारित किया गया कि सिहात ठाकुर को दण्ड दिया जाए, किसानों की मांगे जल्द पूरी की जाए और सरकार की देखरेख में भूमि–बन्दोबस्त चालू किया जाए। महिलाएं विभिन्न जत्थे, रंग–बिरगे परिधानों में सज्जित, गीत गाती हुई, कटराथल के लिए आई, बात–बात में सांमतों का उपहास और उन्हें चेतावनी देते हुए शेखावटी की मर्दानी महिलाएं सभास्थल पर एकत्रित हुई रूढ़िवादी सोच और परम्पराओं को बदलने में सत्यवती देवी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्यवती देवी राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की एक वीर शाख्सियत थी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए दिल्ली की महिलाओं को उनके घरों से बाहर आने के नेक काम के लिए लड़ाई लड़ी। उस समय पुरूष अपने घरों के बाहर महिलाओं की गतिविधियों मे भाग लेने के लिए अविच्छुक थे। पुरूषों का मानना थ कि महिलाएं केवल घर का काम जानती है। सत्यवती देवी ने रूढ़िवाद के गढ़ को हिला दिया और महिलाओं को अब केवल सामान नहीं माना जा सकता। सत्यवती उनके दिलों में देशभक्ति के ज्वलतं प्रेम की मंशाल जलाई। उनके भाषणों को सुनने के लिए दिल्ली के रूढ़िवादी समुदायों की महिला बड़ संख्या में आती थी। श्रीमती सत्यवती देवी स्वामी श्रद्धानन्द की पौत्री थी। वह उन वर्षों की अग्रणी महिला नेता थी। संगठन के लिए उसने ज्वलंत कथन और उल्लेखनीय क्षमता ने महिलाओं को सत्याग्रह अभियानों में शामिल होने के लिए आकार्षित किया। सत्यवती देवी ने अपने भाषणों से वातावरण को विद्युतीकृत कर दिया। सत्यवती देवी ने कांग्रेस महिला समाज और कांग्रेस देश सेवा दल की स्थापना की। जीवन के सभी क्षेत्रों और दिल्ली के सभी कोनों से महिलाओं को उनकी ईमानदारी और भावुक देशभक्ति के आकर्षित किया था। बाद में वह कांग्रेस सोशलिस्त पार्टी के संस्थापक सदस्यों में से एक बन गई वह दिल्ली के कपड़ा श्रमिकों को प्रबुद्ध करना चाहती थी और उन्हें राजनीतिक रूप से जागरूक करना चाहती थी। नमक सत्याग्रह के दौरान सत्यवती देवी और उनके सहयोगियों ने दिल्ली में शाहदरा उपनगर में एक दलदली भूखंड पर इकट्ठा होने का फैसला किया, जहां उप–मिट्टी के पानी की मात्रा अधिक थीउनमें से पचासों ने नमक कानून की अवहेलना की। ऐसा 10 दिनों तक चला। यह घटना दिल्ली में सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरूआत थी।

सत्यवती देवी के समान ही अंजंना देवी ने 1921–1924 ई॰ तक मेवाड तथा बूंदी की महिलाओं में राजनीतिक चेतना जागृत की और समाज सुधार तथा सत्याग्रह का काय किया। श्रीमती चौधरी ने बेंगू। मेवाड़। में सत्याग्रही किसान महिलाओं को मार्गदर्शन दिया। 1932–1935 तक राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लेने के कारण 2 बार जेल गई। उन्होंने 1937 ई में डुंगरपूर राज्य में भीलों की सेवा का कार्य किया और 1939–1942 तक सेवा ग्राम आश्रम में रहकर बापू के कार्यक्रम मे भाग लेकर जीवन भर जन सेवा के लिए काम करती रही1

निष्कर्ष

अंग्रेजी हुकुमत से स्वतंत्रता पाने के लिए प्रथम प्रयास 1857 के विद्रोह के माध्यम से किया गया था। इस विद्रोह की नायिका रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, झलकारी बाई आदि वीरांगनाएं थी जिनकी वीरता ने अंग्रेजों के मन में भय की भावना व्याप्त कर दी थी। इनके अतिरिक्त आम जन साधारण महिलाएं भी थी जैसेः– शिवदेवी, जयदेवी, किशोरी देवी, सत्यवती देवी, श्रीमती त्रिवेणी देवी, श्रीमती उतमा देवी, फूलां देवी, महारानी किशोरी देवी जैसी वीरांगनाओं ने भी अपने प्राणों की बाजी लगाकर भारतवर्ष के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किए। जिसका अनुकरण करके न जाने कितनी महिलाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी अनेक यातनाएं सही उनके कितने ही लाल भारत माता की गोद में सो गए, कितनों के मस्तक का सिंदूर मिट गए जाने कितनी महिलाएं बेघर हो गई।

एक–एक इंच भूमि खून के एक कतरे की एक बूंद से सींच गई। स्वतंत्रता के स्वप्न पूरे हुए आजादी का महल तैयार हो गया। इसमें कोई अतिश्योक्ति नही कि आज हम जिस स्वतंत्रता के महल में सांस ले रहे है उसकी जड़ 1857 की असंख्य नर नारियों ने अपने खून से सींच कर इतनी मजबूत कर दी है कि इसका हिलना असंभव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मनमोहन कौर; भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाएं स्टर्लिं पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।*
2. *आशा रानी व्होरा महिला और स्वराज; प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।*
3. *श्री सच्चिदानन्द भट्टाचार्य, भारतीय इतिहास घोष श्री सच्चिदानन्द भट्टाचार्य।*
4. *लेखकः महावीर सिंह जाखाड़, पुखावः जाटों के विश्व साम्राज्य और अवधि युग पुरूष 2004 प्रकाशक अरूधरा प्रकाशन, सुजानगढ़ (चुक)*
5. *हरनाम सिंह जिन्दाः ठाकुर देशराज–राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा, राजस्थान स्वर्ग जयन्ती प्रकाशन, हिन्दी ग्रंथ अकादमी।*
6. *के आर थानूनगोः जाटों का इतिहास, वीर सिंह, 2003,*
7. *ठाकुर देशराजः जाट जन सेवका, 1949*
8. *डॉ॰ पेमाराम : शेखावटी किसान आन्दोलन का इतिहास, 1990*
9. *राजेन्द्र थसवाः मेरा गांव मेरा देश, जयपुर, 2012*
10. *1857 स्वतंत्रता आन्दोलन के अनजाने तथ्यः 1857 सैनिक विद्रोह नहीं अपितु आजादी का जब आन्दोलन था लेखक, सुधीर व्यास।*